International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-05-2024, Accepted: 13-06-2024, Published: 05-07-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 1-4

मैला आँचलः आँचलिकता से राष्ट्रीयता तक

मौसम तिवारी[1], स्नेहलता दास[2]
[1] शोधा छात्रा, हिन्दी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, विद्या विहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत
[2] विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, विद्या विहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत

सारांश
हिन्दी में आँचलिकता की कसौटी ते करने वाले उपन्यास 'मैला आँचल' की आँचलिकता के विविध आयामों की पड़ताल उपन्यास के प्रकाशन से ही आलोचना तथा सोध का विषय रहा है। प्रस्तुत आलेख 'मैला आँचल' की आँचलिकता में उसकी राष्ट्रीयता के विविध पहलुओं पर विचार करता है ताकि आँचलिकता के कवच को उघाड़ कर 'रेणु' की राष्ट्रीयता को अभिव्यक्ति दी जा सके।

मूल शब्दः मैला आँचल, आँचलिकता, राष्ट्रीयता, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विविध संदर्भ

'मैला आँचल' हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की परंपरा में सर्वप्रथम आँचलिक उपन्यास माना जाता है। साथ ही इसने आँचलिकता की विशिष्टता, कलात्मकता और विशेषता को अपने भीतर सफलतापूर्वक समेटा है। दरअसल, सच तो यह है कि हिंदी उपन्यासों में आँचलिक उपन्यासों के लिए कसौटियाँ खुद 'मैला आँचल' ने ही गढड़ी है। ऐसी कम ही रचनाएं होती हैं, जो अपने आप में किसी विशिष्ट शैली का प्रतिमान बन जाती हैं, और उस विधा के लिए मार्गदर्शन और प्रस्थान बिंदु बन जाती हैं। मैला आँचल इसी प्रकार की महत्वपूर्ण रचना है। इसकी आँचलिकता को स्वयं लेखक 'फणीश्वरनाथ रेणु' ने इसकी भूमिका में उजागर किया है[1]

'यह है 'मैला आँचल', एक आँचलिक उपन्यास।.....। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर इस उपन्यास–कथा का क्षेत्र बनाया है।[1]

आँचलिक उपन्यास, उपन्यास लेखन की एक शैली है जिसमें किसी अंचल विशेष की विशेषताओं का समाहार होता है। राजेंद्र अवस्थी के अनुसार ''यह अंचल एक देहात हो सकता है, एक भारी शहर भी, शहर का एक मुहल्ला भी और इन सबसे दूर सघन वनों की उपत्यकाएँ भी।''[2]

आँचलिक उपन्यासों की कुछ सामान्य विशेषताएँ होती हैं। मैला आँचल उनका सफल निर्वाह करता नजर आता हैय

1. इसमें आँचलिक अभ्यासों की तरह एक विशिष्ट क्षेत्र या गाँव मेरीगंज को उपन्यासकार ने उपन्यास का आधार बनाया है।
2. मेरीगंज की भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का यथार्थवादी वर्णन कथाकार ने सफल रूप से किया है।
3. स्थानीय रंगत वाली लोकसंस्कृति, लोकजीवन, लोकपर्व, लोकउत्सव और लोकभाषा का सार्थक एवं जीवंत प्रयोग मैला आँचल में किया गया है।
4. इसमें पात्रों की संख्या 256 से भी अधिक है परंतु इन से किसी एक को इसका नायक नहीं माना जा सकता अपितु ये सभी पात्र मिल कर समस्त अँचल 'मेरीगंज' को ही प्रस्तुत उपन्यास का नायकत्व प्रदान करते हैं।

मैला आँचल अपने प्रकाशन, 1954 से ही विवाद का विषय रहा। कुछ आलोचकों को इससे बहुत शिकायतें हुईं। सच कहें तो ये आलोचक भ्रमित हो गए थे, उन्हें उसके भीतर की संवेदना को ज्ञान नहीं हो पाया। 'रेणु' का कथन है ''जब मैंने 'मैला आँचल' लिखा और उसके भीतर का टाइटल छपने जा रहा था तब मैंने लिखा 'मैला आँचल' और फिर उसके नीचे लिख दिया 'एक आँचलिक उपन्यास' मैंने यही सोचकर किया कि मैंने जो शब्द इस्तेमाल किया, जैसी भाषा लिखी क्या पता उसको लोक कबूल करेंगे या नहीं? इसलिए मैंने उसे आँचलिक उपन्यास कह दिया।''[3]

इस कथन को जानने के उपरांत यदि कोई विस्तृत दृष्टि से बिना इस आँचलिक शब्द का भार ढोए उपन्यास में वर्णित विषय का विश्लेषण करे तो उसे ज्ञात होगा कि आँचलिकता तो इसके रूप में अधिक है, अन्यथा विषयवस्तु के स्तर पर उपन्यास में राजनीतिक सामाजिक– सांस्कृतिक पक्ष व्यापक और राष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रबल रूप से चित्रित हुए हैं। बच्चन सिंह ने अपने हिंदी साहित्य के दूसरा इतिहास में लिखा है ''ये नायक (मेरीगंज) अपनी सीमाओं में बंधे रहकर भी उनके पार जाता हैं।[4] आलोच्य विषय 'मैला आँचल, आँचलिक उपन्यास होते हुए भी अपनी आँचलिकता का अतिक्रमण करता है। हमें इसके द्वारा किए गए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष के साक्षात्कार को उद्घाटित करने की ओर प्रेरित करता है। इसमें मेरीगंज के माध्यम से लेखक ने तत्कालीन भारत में जिस स्थिति की ओर हमारी दृष्टि आकृष्ट की है वह केवल इसकी आँचलिकता के दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। इसके राष्ट्रीय परिप्रेक्ष को देखने के लिए इसमें वर्णित राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी पक्षों का विवेचन करना होगा। जो निम्न में किया जा रहा है

मैला आँचलः राजनीतिक संदर्भ

उपन्यास का प्रारंभ 1946 ई. के किसी समय से होता है और अंत अप्रैल 1948 के आस–पास होता है। 15 अप्रैल 1947 में देश का विभाजन होता है सत्ता परिवर्तन होता है परंतु इससे पूर्व ही औपनिवेशिक शासक के भीतर ही कांग्रेसी मंत्रीमंडल बन गए थे और स्वाधीनता के पश्चात् शासन व्यवस्था केवल गोरी चमडीवालों के हाथ से निकल कर भारत के काली चमड़ीवालों के हाथों में आ गया। शासन व्यवस्था तो वही पुरानी बनी रही जिसका निर्माण उपनिवेशवादियों ने अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए किया था। उपन्यास का यह समय भारतीय राजनीति का संक्रमणकाल है जिससे लगभग सभी साहित्यकार पीछा छुड़ा कर भागें परंतु 'रेणु' ने इन दो वर्षों का चित्रण कर संपूर्ण भारतीय राजनीति की तत्कालीन स्थिति को यथारूप में सामने लाने का प्रयास किया है। स्वराज उत्सव में ''यह आजादी झूठी है!'' ''देश की जनता भूखी है।''[5] का नारा लगाने वाला औराही– हिंगना को सोशलिस्ट पार्टी का नौजवान और कोई नहीं स्वयं 'रेणु' हैं। वे इस परिस्थिति का विरोध करते हैं। निम्न में उपन्यास में चित्रित राजनीतिक स्थितियों का अवलोकन संक्षेप में है

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन व्यवस्था

इस व्यवस्था के चलते उपन्यास के आरंभ में ही 'मलेटरी' के आने की खबर सुन कर गाँव के लोग स्वतंत्रता सेनानी बालदेव को रस्सी से बांध लेते हैं क्योंकि वे दमन नीति के शिकार हैं। जब शासकों की ओर से बालदेव को सम्मान मिलता है तो वे भी उसको पूज्य मान लेते हैं। यह उनकी मानसिक गुलामी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। भारत में ब्रिटिशों की दमन नीति का यह चित्र केवल मेरीगंज का नहीं है परंतु संपूर्ण राष्ट्र का है। भारत में मेरीगंज जैसे गाँव के होने का चित्रण है जहाँ न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ, न ही 1942 जैसे जन आंदोलन ही पहुँचा, परंतु उसके अफवाह जरूर पहुँचते थे।

मार्टिन शासक वर्ग का है परंतु उनकी मानवमात्र के प्रति संवेदनहीनता के कारण ही मेरी की मृत्यु चिकित्सा के अभाव में होती है और मार्टिन के मरने के 35 साल बाद मेरीगंज में मलेरिया सेंटर खुलता है। यह विचारणीय है। भारत की यह दुर्दशा केवल मेरीगंज की नहीं है।

सेना या पुलिस द्वारा किस प्रकार भारत के स्वतंत्रता सेनानियों पर यातनाएं दी जाती थीं इसका चित्रण बालदेव की पीठ दिखा कर और लोगों का शासन के प्रति आतंक दिखा कर किया गया है। भगतसिंह जैसे क्रांतिकारियों को फाँसी पर चढ़ाये जाने का भी चित्रण है।

1942 के आंदोलन की कथा उपन्यास में कई बार आती है। उस समय मिलिट्री की घेराबंदी का, कॉमरेडों की समाजवाद का, चलित्तर कर्मकार जैसे सरकारी गवाह बने लोगों को क्षति पहुँचाने वाले का चित्रण है।

बड़े जमींदार

अंग्रेजी शासन व्यवस्था गाँव में प्रतिष्ठित करने के मुख्य स्तंभ रहे हैं। अनेक गाँवों के लोगों ने शायद पूरे ब्रिटिश काल में कभी अंग्रेजों का मुँह भी नहीं देखा है। इन ग्रामवासियों को अपने ही गाँव के बड़े जमींदारों, साहूकारों की ही गुलामी भोगी है। शासन व्यवस्था एवं जमीदारों तथा तहसीलदारों के द्वारा मिलित रूप से किसानों पर अत्याचार करके लगान वसूल करने के लिए क्रूर दमन का चक्र चलाना भी इस उपन्यास का विषय रहा है। कैसे किसान अपनी जमींन इस व्यवस्था में खोता चला जाता है इसका बखुबी चित्रण हुआ है।

औपनिवेशिक शिक्षा का चित्र, यही पढ़ कर जाना जा सकता है कि मेरीगंज गाँव में कुल दस लोग दस्तखत करने लायक पढ़े–लिखे थे। अधिक पढ़े –लिखे लोग शासन के लिए खतरा साबित हो सकते थे जैसे डॉ. प्रशांत।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न राजनीतिक दलों की सक्रियता

उपन्यास में कांग्रेस पार्टी के जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, बाबू राजेन्द्र प्रसाद को तथा कांग्रेस सोशलिष्ट पार्टी के जय प्रकाश नारायण को भी स्थान दिया गया है।

एक ओर बालदेव एवं बामनदास जैसे कांग्रेसियों का चित्र है तो दूसरी ओर किस प्रकार तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद जैसे धनी जमीदार इसे अपने काले कर्मों के ऊपर सफेद खद्दड डाल कर अच्छे बनने के लिए प्रयोग करते हैं का चित्रण भी हुआ है।

कालीचरण, बासुदेव जैसे नौजवान कांग्रेस के अंग परंतु अधिक जुझाः संघर्ष करने वाले कांग्रेस सोशलिष्ट पार्टी के मेंबर हैं। कालीचरण का कथन देखिए–

''कॉमरेड कालीचरण और कॉमरेड बासुदेव!..... सुशलिंग पाटी!.... यही पाटी असल पाटी है। गरम पाटी है। 'किरांतीदाल' का नाम नहीं सुना था?.....'बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह, ''यह गाना नहीं सुने हो ? वही यारी है। इसमें कोई लीडर नहीं। सभी साथी हैं, सभी लीडर हैं।''[6]

क्रांतिकारी चलित्तर कर्मकार भी उपन्यास में उपस्थित हैं, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी अपनी काली टोपियों के साथ केवल हिंदू राष्ट्र को बनाए जाने की कोशिश करता हरगौरी के माध्यम से सामने आता है।

राजनीतिक दल और शासक वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस कांग्रेस ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में समूचे देश की ओर से अगुआई की परंतु स्वतंत्रता प्रप्ति के उपरांत वह ऐसे अमिरों जालसाजों, कालाबाजारी करनेवालों के हाथों का औजार बन जाती है जिसे वे अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु अपने चरित्र को ओछेपन को छिपाने हेतु प्रयोग करते हैं।

इसका फल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बावनदास की हत्या, डॉ. प्रशांत जैसे संथालों का साथ देने वाले व्यक्ति की गिरफ्तारी, संथालों को दामुल हौज (आजीवन कैद) के रूप में मिलता है।

यह 1946 और 1948 क्रमशः स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के कांग्रेस का चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

जातिवादी राजनीति

मेरीगंज के बारह वर्णों के भीतर तीन प्रभुताशाली समुदाय हैंरू–

- कायस्थ या मालिक टोला बड़े काश्तकार
- राजपूत टोली बड़े–मध्यम काश्तकार
- यादव टोली– छोटे/मध्यम काश्तकार

जब संथाल गाँव के जमींदार टोली के साथ संघर्ष होता है तो कायस्थ टोला वाले, राजपूत एवं यादवों को जमीन के मोह में फाँस कर अपने हिसाब से संथालों के विरुद्ध प्रयोग करते हैं। इन तीनों में आपसी मतभेद है परंतु तीनों इस स्थिति में एकजूट होकर कार्य करते हैं और निर्दोष संथालों की टोली को लूटते उनकी स्त्रियों के साथ कुकर्म करते नजर आते हैं। ये लोग छूट भी जाते हैं और संथालों को आजीवन कारावास की सजा होती है।

बिहार में आज इस प्रकार की जातिवादी राजनीति का जो चित्र है उसे 'रेणु' ने 1954 में ही प्रस्तुत कर दिया था। ये तीन जातियाँ भी अलग–अलग राजनीतिक मत रखती हैं। विश्वनाथ प्रसाद कांग्रेसी है, हरगौरी कालीटोपी वाला है और कालीचरण कॉमरेड।

भारत की राजनीति का जो चित्रण मैला आँचल में है वह केवल मेरीगंज का नहीं अपितु संपूर्ण भारत वर्ष का है यहाँ निश्चय ही उपन्यास अपनी आँचलिकता का अतिक्रमण करता दिखता है।

मैला आँचलः सामाजिक संदर्भ

बाहर की दुनिया से अलग

1942 के जन आंदोलन की खबरें मेरीगंज में अफवाहों के रूप में आना उसके बाहर की दुनिया से कटे होने का संकेत है इस प्रकार के कई गाँव उस समय भारत वर्ष में थे।

जातिगत विभाजन

मेरीगंज के जातिगत विभाजन से भारत में प्रचलित जातिगत व्यवस्था का यथार्थ चित्र देखने को मिलता है। राजपूतों और कायस्थों का पुश्तैनी मनमुटाव, ब्राह्मणों का तीसरी शक्ति के रूप में काम करना। यादवों का स्वयं को यदुवंशी क्षत्रिय मानना। राजपूतों का उन्हें (यादवों में) क्षत्रिय नहीं मानना। यादवों की अर्थिक स्थिति अच्छे होने के कारण लोगों का उसे 'गुमर टोली' (निम्न जातियों का बोधक शब्द) न कहना। अन्य निम्न जातियों को गुमर टोली कहना परंतु उन जातियों का स्वयं को क्षत्रिय मानना जैसे– पोलिया टोली, तंत्रिमा(ततका) छत्री टोली, गहनलोत छत्री टोली, कुर्म छत्री टोली, धनुखधारी छत्री टोली, कुशवाहा छत्री टोली आदि का चित्रण भारत की जातिवादी सामाजिक व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा खोल देती है कि भारत में

निम्न समझे जाने वाली जातियों में भी दूसरों से स्वयं को उच्च जाति मानने की प्रथा है वे अपने से निम्न जाती ढूंढ ही लेते हैं तथा उपेक्षित जातियों का भी समाज में मनमुटाव है वे एकत्रित नहीं हैं।

स्त्री–पुरुष संबंध

उपन्यास में चित्रित ग्रामीण समाज के स्त्री–पुरुष संबंधों को देखने से भारत के ग्रामीण जनता की शारीरिक भूख का पता चलता है। ऐसा लगता है कि पूर्णिया, मिथिला अंचल में ऐसे संबंधों को लेकर काफी उन्मुक्तता है।

महंथ का लछमी को रामदास का रामपियारी को दासिन रखना, कहें तो रखेल रखना समाज स्वीकृत है, लोग कुछ नहीं करते। बालदेव एवं लछमी अविवाहित होने पर भी एक साथ रहते हैं। कालीचरण और मंगला के प्रेम संबंधों पर अधिक टीका टिपणी नहीं है। निम्न जातियों में वैवाहिक संबंधों के अतिरिक्त अनेक स्त्री–पुरुष के बीच शारीरिक संबंध है। कमला एवं प्रशांत का संबंध अविवाहित ही संतान उत्पत्ति का कारण बनता है।

शिक्षा की स्थिति

पूरे गाँव में दस लोग हैं जो दस्तखत कर सकते हैं, उन्हीं में तहसीलदारी की शिक्षा भी शामिल है। नये पढ़ने वाले कुल पंद्रह है। जिसका अर्थ है कि 1946 तक आते–आते भारत में शिक्षा के प्रति जागरुकता की भावना आ गई थी। सामान्य चिट्ठी पढ़ने के लिए भी सभा में सराहना मिलती है, यह शिक्षा की स्थिति है।

अशिक्षा के कारण जोतखी जी कहते हैं डॉक्टर ही गाँव के कुएं में दवाई डाल कर हैजा फैलाते हैं, इंजेक्शन में जहर, दवा में गाय का खून मिला हुआ होता है। यह पिछड़ी मानसिकता अशिक्षा का परिणाम है।

अंधविश्वास

भारतीय समाज की अंधविश्वास का चित्रण उपन्यास में सफल ढंग से किया गया है। भूतप्रेत, टोना–टोटका, जैसी स्थितियाँ आम थीं। गनेश की नानी, पारवती की माँ को डाइन बना दिया जाता है और अंत में ही– उनकी हत्या कर देता है। कमला के विवाह में रुकावट इसी वजह से है कि इससे पहले जहाँ संबंध तय हुआ वहाँ लड़के की माँ मर गई तो कहीं आग लग गयी। अब कोई उसे व्याहने को तैयार नहीं है। ये सब अंधविश्वास के कारण ही है।

नशा

गाँव में लोग ताड़ी पीते हैं। वे इसके उन्माद में कहते हैं ष्तीन आने लबनी ताड़ी, रोक साला मोटरगाड़ी।''[7]

मैला आँचलः आर्थिक संदर्भ

भारतीय ग्रामीण जीवन की आर्थिक स्थिति का चित्र अभाव, गरीबी, कर्ज के आस–पास घुमता है। इनकी स्थिति ऐसी है कि निम्न जाति के लोगों ने जीवन में पूड़ी जलेबी देखी भी नहीं। कृषकों की स्थिति का चित्रण इस प्रकार है।

''दो महीने की कटनी, एक महीने की मड़नी, फिर साल–भर की खटनी।..... ।''

अनाज से मुनाफा बड़े लोग कमाते थे। किसानों की तो जमीनें छीन ली जाती थी – प्रपंच से। मजदूर को सवा रुपया रोज मिलता था, जिससे एक आदमी का भी पेट नहीं भरता था। कपड़े के बिना वे अर्धनग्न थे। औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चलाती थी। डॉक्टर ने सात महीने के बच्चे को बथुआ और पालक के साग पर पलते देखा था। ये चित्र ये आर्थिक स्थिति भारत वर्ष की है केवल मेरीगंज की नहीं।

मैला आँचलः धार्मिक संदर्भ

भारतीय जीवन में धर्म की महता किस प्रकार रूढ़ियों, विकृतियों एवं विसंगतियों के योग से मैली होती जा रही थी इसका चित्र उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में सेवादास के द्वारा लक्ष्मी का शोषण, रामपियारि का रामदास के साथ मठ में रहना, के माध्यम से सामने आता है। आचार्य गुरु जैसा व्यक्ति भी न्यायपूर्ण आचरण नहीं करते। नागाबाबा गंजेड़ी और धूर्त है। लक्ष्मी के साथ शारीरिक संबंध बनाने का प्रयास करता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि तत्कालीन भारतीय समाज में धर्म के नाम पर जनता को मूर्ख बनाया जाता था, रामदास का भोज खिलाकर रामपियारी को रखने के लिए पंचायत को मना लेना इस बात का द्योतक है कि उस समय धर्म को स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रयोग किया जा रहा था।

मैला आँचलः सांस्कृतिक संदर्भ

भारत में लोग विपन्नता से ग्रस्त होकर भी त्यौहार मनाते हैं। होली को बड़े उल्लास से संपूर्ण भारत में मनाया जाता है। नाच–गीत, हँसी–ठिठोली भी होती है।

'विदापत' नाच का कार्यक्रम होता है।

वर्षा के न होने पर गाँव की महिलायें 'जाट–जट्टीन' का खेल करती हैं और रात में हल जोतती हैं। हल जोतते समय गाँव के बड़े–बूंढों को गाली दी जाती है, पर उसे कोई बुरा नहीं मानता, उल्टे जिसका नाम छूट जाता है, वह दुखी होता है।

नौटंकी का प्रचलन भी है और सरदार भगतसिंह से संबंधित नगाड़े की चोट पर कार्यक्रम प्रस्तुत होता है– अर्थात समाज धीरे धीरे राजनीतिक चेतना से भी जुड़ रहा था। इस उपन्यास में 'मऊजिया के गीत' हैं, ''विदापत नृत्य गीत हैं।''

लोक जीवन में संस्कृति का सुंदर चित्रण 'रेणु' ने प्रस्तुत किया उन्हें ज्ञात था यदि भारत के ग्राम का मैलापन दिखाना है तो उसकी सुंदरता भी प्रस्तुत करनी होगी जो उनकी संस्कृति में मुखर है।

लोकभाषा का जैसा प्रयोग 'रेणु' ने किया वह भारत की ग्रामीण भूमि के चित्रण के लिए अनिवार्य है। वे महत्मा, गुनी, लाल पत्तरवा (लाल झंडी), तुकताक (टोटका), आसनि (आखिन), गड़ हियाँ (छोरे गट्टे) शब्द का प्रयोग बेमलब नहीं करते संपूर्ण भारत के ग्रामांचल मे ऐसे ही अनेक शब्द प्रयोग किए जाते हैं जो अपनी–अपनी भाषा के होते हैं।

नित्यानंद तिवारी सत्य ही कहते हैं ''मैला आँचल की कुछ और महत्वपूर्ण विशेषताएँ जिन पर अब तक विचार नहीं हुआ है। उसकी ठेठ देशीयता (आँचलिकता) विश्वनागरिकतावादी विचारधारा के सामने चुनौनी की तरह खड़ी है। वह चाहे जितनी पिछड़ी हुई हो, उसकी जड़ें हैं, परंपरा है, सांस्कृतिक समृद्धि है और इन्हीं कारणों से वह सजीव तथा भिन्न है।''[9]

निष्कर्ष

'मैला आँचल में व्यक्त आँचल जो मैला है वह मेरीगंज का ही नहीं भारतमाता का भी है। मेरीगंज समूची भारतभूमि का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास के अंत में डॉ. प्रशांत कहता है ''मैं साधना करूँगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले!''[10] उपन्यायकार ने भारतीय ग्राम की शश्यश्यामला भूमि का चित्रण भी किया है और उसके आँचल के मैलेपन का भी। यह केवल आँचलिक ही नहीं है बल्कि अपनी आँचलिकता के आधार पर स्थित भारतीय भूमि का चित्र है। शिवदान सिंह चौहान इसी कारण से उस उपन्यास को "भारतीय जीवन का सबसे कलात्मक और यथार्थवादी महाकाव्य"[11] मानते हैं। प्रेमचंद अपनी रचनाशीलता के अंतिम दौर में जिस ऊँचाई पर दिखाई पड़ते हैं, रेणु ने वहीं से प्रारंभ किया है। इसमें भारतीय पुरातन जड़ता और नवीन गत्यात्मकता की टकराहट है, विभिन्न राजनीतिक

आंदोलनों के अंतर्विरोध हैं, बिरादरीवाद की कड़वाहट है, इनके बीच बजती हुई लोक–संस्कृति की शहनाई है। यह उपन्यास आँचलिक होते हुए भी आँचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। 'रेणु' ने डॉ. प्रशांत के माध्यम से सत्य ही यथार्थ चित्रण किया है

'भारतमाता ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है 'यामल,
धूल भरा मैला सा आँचल!''[12]

इस उपन्यास को देखते हुए इसके राष्ट्रीय परिप्रेक्ष को याद कर यही पंक्तियाँ दुहराने का बार–बार मन करता है।

संदर्भ सूची

1. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचलिकता, राज कमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, भूमिका
2. epgpathshala, आँचलिकता की अवधारणा और हिन्दी उपन्यास
3. epgpathshaİ, आँचलिकता की अवधारणा और हिन्दी उपन्यास
4. सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, बालाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. पृ. 481
5. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृ. 164
6. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिली, पृ. 66
7. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिली, पृ. 9
8. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिली, पृ. 54
9. तिवारी नित्यानंद, मैला आँचल, लेख, पृ. 9
10. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, पृ. 227
11. epgpathshaİ, हिंदी आलोचना में मैला आँचल का मूल्यांकन, पृ. 6
12. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिली, पृ. 102

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचलिकता, राज कमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली
2. सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास
3. प्रेमी गंगासहाय, मैला आँचल (आलोचना एवं व्याख्या), साहित्य सरोवर, आगरा
4. नित्यानंद तिवारी जी का लेख – 'मैला आँचल'
5. प्रियंका कुमारी का लेख – 'फणीश्वरनाथ रेणु के हिंदी कहानी साहित्य में ग्रामीण एवं सामाजिक चेतना'

इंटरनेट सामग्री

1. epgpathshaİ से
2. www.iasbook.com/hindi/maila-anchala-menn-samajika-va-rajanitika-sandarbha